शाकाहार ही मानव का आहार है!

ब्रह्मर्षि पत्रीजी

शाकाहार ही मानव का आहार है!

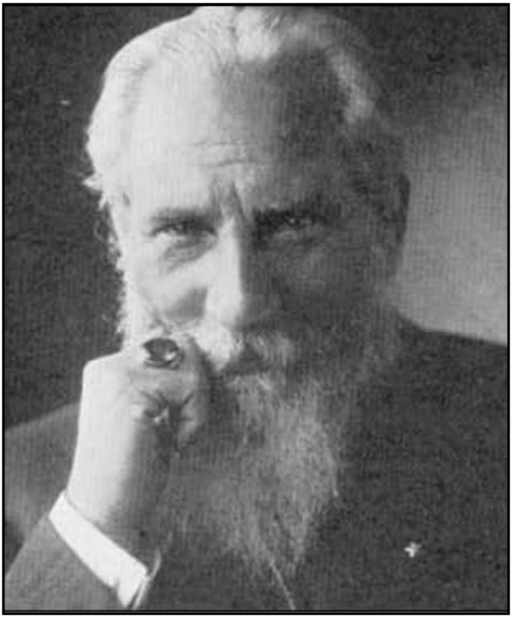

लेखक : **C.W. Leadbeater**

प्रचुरण : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति जे.पुष्पलता

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) ज्ञान माला Rs.70/-
3) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................. Rs.70/-
4) अगर मानव को योगी बनना है तो ?............ Rs.60/-
5) महात्माओं का संदेशों Rs.50/-
6) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
7) शाकाहार ही मानव का आहार है !............... Rs.50/-

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए !

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्रह्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मों का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए ।

‘‘शाकाहार ही क्यों खाना चाहिए ?’’

हम जानते हैं कि ‘‘शकाहारी’’ क्या है । जो लोग मंसाहार नहीं खाते उन्हें ‘‘शाकाहारी’’ कहा जाता है।

आज कल के दिनों में शाकाहार के ख़िलाफ़ एक ख़ूबसूरत सिद्धांत के बारे मे अक्सर बात कर रहे है। मनुष्य मांस खाने के बिना नहीं रह सकता। दरअसल, यह कहना बहुत ही बेवकूफी भरी बात है, मूर्खतापूर्ण बात है । या सच को बेहत तोड़ -मरोड़ कर बदलने वाली बातद्य कारण यह है कि लाखों लोग मांसाहार खाए बिना भी अच्छे स्वास्थ्य में रहते हैं।

यदि आप प्रकृति में ठीक से विकास करना चाहते हैं, तो आपको योगियों के शरीर की तरह शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। आइए विस्तार से देखें कि शाकाहार क्यों शुद्ध, अच्छा और श्रेष्ठ है।

‘‘अधिक पोषक तत्व!’’

मृत मांसाहार की तुलना सब्जियों में अधिक पोषक तत्व होता है। क्योंकि शरीर निर्माण के लिए चार तरह के भोजन की आवश्यकता होती है। वे है (1)प्रोटीन या अमीनो अम्ल, (2)कार्बोहाइड्रेट (स्टार्च), (3) वसा पदार्थ, (4) लवण। यह वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत वर्गीकरण है। मांसाहार की तुलना सब्जियों में उपरोक्त अधिक प्रतिशत में होता है। इस में कोई संदेह नहीं है। उदाहरण के लिए, दूध, मलाई, गाय या भैंस को बछड़ा पैदा होने के बाद आने वाला पहला गाढ़ा दूध से बनाई गई मिठाई, दाल, मटर और सेम में प्रोटीन की प्रतिशत अधिक होती है। चावल, गेहूं और अन्य अनाजों मे, फल और कई सब्जियों में कार्बोहाइड्रेट (carbohydrate) की मात्रा अधिक होती है। वसा और प्रोटीन वाले सभी आहार पदार्थों में पानी होता है, इसके अलावा, यह मक्खन और तेल के रूप में भी

उपलब्ध है। साथ ही लवण (नमक) सभी पदार्थों में थोड़ी या अधिक मात्रा में मौजूद होता है। ये लवण शरीर के ऊतकों के पोषण के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन लवणों का अनुपात कम होने पर अनेक तरह की बीमारियाँ उत्पन्न होती है। मृत मांसाहार में केवल प्रोटीन होता है। वसा पदार्थों का कोई विशेष मूल्य नहीं है। लेकिन हमें यह याद रखने की जरूरत है कि प्रोटीन का मूल केवल पौधों में ही व्यवस्थित होता है।

दाले, मटर, सेम, मोठ आदि में किसी भी मांसाहार की तुलना में अधिक प्रोटीन होता है। पौधों में मौजूद प्रोटीन में न केवल शुद्ध बल्कि वास्तविक ऊर्जा भी होती है। जानवरों के शरीर में प्रोटीन यानी पौधों से आहार के माध्यम से प्राप्त प्रोटीन धीरे-धीरे अपनी संरचना खो देते हैं और उनमे जो ऊर्जा पहला था खो देता हैं। इस प्रकार जो चीज़ एक जानवर द्वारा उपयोग की जाती है उसका दूसरा जानवर दोबारा उपयोग नहीं करता हैं। जिसे जानवरो में प्रोटीन कहा जाता है, उसका वास्तव में कोई पोषक मूल्य नहीं है। जब मृत शरीर पल-पल बदलता है तो कई तरह के विषैले पदार्थ भी निकलते हैं। वे सभी प्रकार के मांस में मौजूद होते हैं और मांसाहारियों के लिए बहुत हानिकारक होते हैं । मांसाहार खाने का मतलब है कि हमें कोई पोषण मिलता है। हमे यह समझना चाहिए कि यह उन पोषक पदार्थो के कारण है जिन्हें जानवर ने अपने जीवनकाल के दौरान शाकाहार से अवशोषित किया है। लेकिन ये पोषक पदार्थ आवश्यकता से कम उपलब्ध होते हैं। क्योंकि ओ जानवर इसका आधा हिस्सा पहले खुद के लिए ही इस्तेमाल करता है। पोषक पदार्थो मे एक छोटे प्रतिशत के अलावा, मांसाहार लेने की वजह से हम को कई खतरनाक विषैले पदार्थों का भी सेवन मनुष्य ले रहा है। यदि हम आहार के विज्ञान को ठीक से समझ लें तो शाकाहार साम्राज्य से ही हमें बहुत शक्तिशाली परिणाम पाते हैं। इसके अलावा,

हमारे पास किसी भी प्रकार के प्रदूषण के संपर्क में आए बिना और जीवित जीवों को नुकसान पहुंचाए बिना अच्छे परिणाम प्राप्त करने का अवसर है।

''बुद्दीमानों की राय!''

सर हेनरी थॉमसन जी ने जीवित रहने के लिए मांसाहार की आवश्यकता है, यह कहना बहुत बड़ी गलती है! मानव शरीर के लिए आवश्यक सब कुछ वृक्षों के साम्राज्य से प्राप्त होते हैं। शारीर के पोषण और विकास के लिए जो कुछ आवश्यक है वह सब शाकाहारी से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शाकाहार से ही गर्मी और ऊर्जा भी मिलती है। प्रसिद्ध डॉ. विलियम्स प्लेफ़र सी.बी. यह तो स्पष्ट रूप से कहा है कि मनुष्य के लिए मांसाहार आवश्यक नहीं है। लंडन के अस्पतालों मे प्रसिद्ध डॉ. अलेक्जेंडर हाँग ने कहा है कि शाकाहार से शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध किया जा सकता है और उच्च शक्तियाँ प्राप्त की जा सकती है।

डॉ.मिलनर फोडार्गिल ने कहा कि "योद्दों के द्वारा नेपोलियन ने जितना रक्तपात सृष्टि किया है उस से अधिक, कई जीवों को जान लेने वाले मनुष्यों का क्रूरत्व कई गुना अधिक है।"

''कम बीमारियाँ!''

मृत जीवों को आहार के रूप में सेवन करने से हम कई गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं। मांस असहज आहार है। इसलिए बहुत से परेशानियां हो रहे हैं। इंसान को कैंसर, बुखार, पेट के कीड़े, कई अन्य बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं। अगर आप 100 लोगों को देखें तो उनमें से 99 लोग मांस खाने के वजह बीमारियों से पीड़ित हो ने मे, कोई आश्चर्य नहीं है। इस तरह Dr.Josaiah Old Fietd MRCS, LRCP ने लिखा मनुष्य को स्वास्थ्य के लिए मांस की आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं, शाकाहार

के वजह से जो अपनी पत्नियों पर पशु क्रूरता से अत्याचार करने वाले कम हो जाएंगे । Sir Edward Saunders ने कहा था कि शाकाहार ही हर किसी के लिए सर्वोत्तम आहार है। जानवरों के मांस से कई बीमारियाँ होती हैं। Sir Robert Christison, M. D. ने कहा कि , इससे पाचन कोशिका में सूजन होती है।

पारिस् विश्वविद्यालय मे किंगफोर्ड ने कहा कि मांस खाने से अनेक प्रकार की कष्टदायक एवं अप्रिय बीमारियाँ होती हैं।

इंग्लैंड मे Prof. Gamji ने कहा, मांस के लिए मारे गए सभी जानवरों में से 1/5 हिस्सा बीमारियों के शिकार होने वाले जानवारों को ही मार दिया जाता है।

Prof. A. Winter Blyth R. R.C.S. ने लिखा की रोग क्रिमो से भरे मांस को सुंदर आहार जैसे बनाया जा रहा है। जानवरों का मांस हमारे सामान्य आंखों को सही दिखाई देता है।

अगर गौर से देखे तो, मांसाहार मे कोई पोषक तत्व नहीं है।

इसमें विषैले पदार्थ भी मिले होते हैं। मल होता है। शाकाहार निर्माण करेगा तो जानवरों का मांस नाश कर देता है। शाकाहार ऊर्जा का संरक्षण करता है लेकिन जानवर ऊर्जा को खर्च करता है। जानवर ऊर्जा का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के व्यर्थ पदार्थ, विषैले पदार्थ को रिहाई करता हैं। इन विषैले पदार्थों मे अधिक प्रतिशत मृत जानवर के मांस में मौजूद होता है। जैसे ही जानवर मर जाता है, वे विसर्जन करना रुक जाता हैं। लेकिन मृत्यु के बाद भी जानवर का शरीर कुछ समय तक विषैले पदार्थ पैदा करते रहता है।

मरे हुए जानवर का मांस कभी भी स्वस्थ स्थिति मे नहीं होता है, यह याद रखना चाहिए क्योंकि जानवर को मारते ही वह सड़ना शुरू होता है। यह जानना चाहिए कि सभी प्रकार के हानिकारक विषैले पदार्थ तैयार होते हैं। प्राचीन काल में तीन बीमारियाँ अस्तित्व में थे। लेकिन जब से लोगों ने मांसाहार खाना शुरू करने के बाद पता चला है कि सैकड़ों नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रहे हैं। मांसाहार के साथ मुर्गी का अंडा नहीं खाना

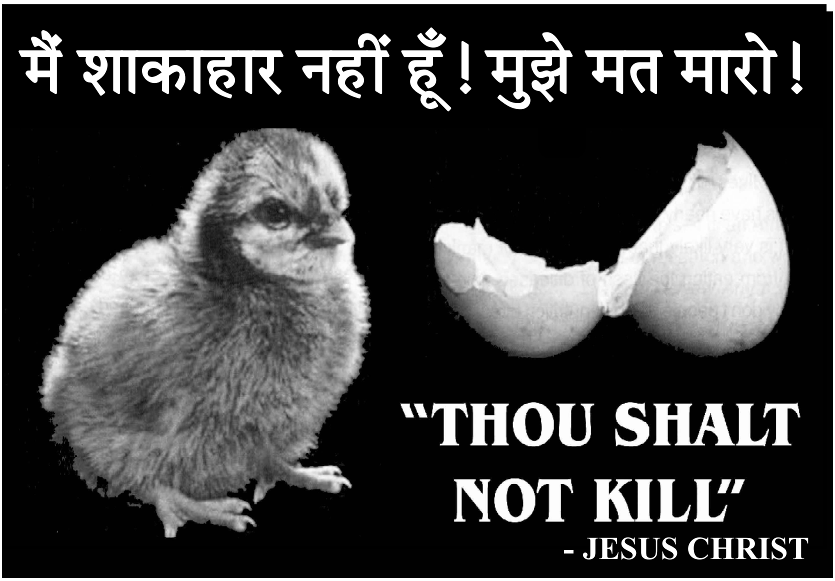

चाहिए । याद रखना चाहिए कि अंडा खाना एक प्राणी को मारना ही है। मुर्गी का अंडा शाकाहार नहीं है । वो भी मांसाहार ही है।

''मनुष्य का स्वाभाविक आहार !''

मानव शरीर की निर्माण स्वाभाविक रूप से मांसाहार के लिए अनुकूल न होने के वजह से, ये मांसाहार उनको उपयुक्त नहीं है। मानव का स्वाभाविक आहार, उसकी शारीरिक निर्माण के आधार पर देखेंगे तो, केवल "फल, सब्जियाँ और कंद ही है। मानवों की शारीरिक निर्माण को देखेंगे तो मनुष्य स्वाभाविक रूप से शाकाहारी साबित कर सकते है।"

Prof. William Lorance of the Royal Society ने कहा है कि मानव के दांत मांसाहारी जानवरों के दांतों से तोडा भी समानता नहीं हैं; यहां तक कि पाचन अंगों की भी कोई तुलना नहीं है; "मानव शरीर का निर्माण शाकाहार जानवरों के समान है।"

पवित्र ग्रंधो पर विश्वास करने वालों को शाकाहार खाना चाहिए? मांसाहार खाना चाहिए? यह तर्क अनावश्यक है। भगवन ने आदम से बात करते हुए कहा है कि, "आपको बीज होने वाले पौधे को दिया है। मैंने फल देने वाले वृक्षों को दिया है; वही आहार है।" लेकिन मनुष्य पतन होने के कारण सबसे नीच मांसाहार खाने का विचार आया है। फिर पूर्व वैभव को बड़ा ने के लिए, आहार के लिए यह भयानक, नीच आहर के लिए जानवरों को मारने की आदत छोड़ ना चाहिए।

''अधिक शक्ति!''

शाकाहार के कारण मनुष्य शक्तिशाली बनता है। हाल ही में कई खेल प्रतियोगिताओं में साबित हुआ है कि शाकाहारी ही शक्तिशाली है, उदा:-जर्मनी में उस समय हुआ साइकिल रेस में उन्नत स्थान पाने वाले सभी लोग शाकाहारी थे। कई प्रयोगों से साबित हुआ है कि शुद्ध शाकाहार

लेने वाले लोग अधिक विजेता होते हैं ।

मांसाहारी अक्सर अपनी शारीरिक शक्ति के बारे में डंडोरा बजाते हैं । लेकिन उनमें शाकाहारियों जैसी सहनशक्ति नहीं होतीं । इसका कारण

यह है कि पहले से ही मांस खराब होने की दशा में हिती है । इसलिए यह ऊतकों में थोड़े समय के लिए रहता है । यदि जानवरों में एक प्रकार का प्रेरणा हो, तो उस जानवर का मांस खाने से और एक प्रेरणा जागृत करती है । इन कारणों से मांस में मौजूद ऊर्जा जल्दी विसर्जन हो जाता है । इसलिए कुछ और ऊर्जा की आवश्यकता महसूस होता है ।

शाकाहार में ऊर्जा स्वयम सिद्ध से संग्रहित होती है । विष पदार्थ नहीं होते है । जल्दी ख़राब नहीं होते । इसके अलावा, उनसे ऊर्जा धीरे-धीरे आता है । इसलिए शाकाहार भोजन करने वाले बिना आहार के अधिक समय तक काम कर सकते हैं ।

यूरोप में मांसाहार से दूर रहने वाले लोग अधिक बुद्धिमान, सहनशील होते हैं । इंग्लैंड में, जर्मनी में मांसाहारी और शाकाहारियों के

बीच प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । प्रतियोगिता मे शकहरियो ने विजय प्राप्त किया ।

सारे विश्व ने सम्मति दिया है कि ग्रीक देश मे पहाड़ी जनजातियाँ मे शक्ति शाली , और सहन शील है । इसका कारण यह है कि वे शाकाहारी हैं । उनके आहार जंगल में पाए जाने वाले फल, छिलके वाले मेवे(NUTS), पनीर, मक्का मिलते है । वैसे ही नाम विख्यात सामने वाले रोमन ग्लेडीएटर का आहार केक और तेल । वे जान ते है कि यही बहुत बलोपेत आहर है ।

ये सभी उदाहरण साबित करते हैं कि ''मांसाहार खाने से ही शक्तिशाली होना असत्य है'' ।

चार्ल्स डार्विन ने एक पत्र में लिखा कि चिली खान मे असाधरण काम करने वाले पूरी तरह से शाकाहारी ही हैं ।

''टर्कि के कूली केवल शाकाहारी खाकर चार सौ से छः सौ पाउंड वजन उठाते थे । टर्की सैनिक भूखे रहने की स्थिति में भी अन्य देशों से लड़ पाये । उनकी सामान्य आदते, शराब से दूर रहना, शाकाहार है । उन आदतों से भी कठिनाई को सहने की शक्ति दी गई ।''

इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दक्षिण भारत के तमिल शाकाहार मजदूर बहुत भारी बोझ उठाते हैं।

और चाहिए तो जानवरों के साम्राज्य को देखेंगे। मांसाहार जानवर बलोपेत नहीं होते। दुनिया में सारा काम शाकाहारी जानवरो से- घोड़े, गधे, बैल, हाथी और ऊँट द्वारा किया जाता है। कहीं भी मनुष्य काम के लिए शेर या बाघ का उपयोग नहीं करता।

''शराब का गुलाम!''

मरे हुए जानवरों को खाने से मनुष्य शराब का आदी हो जाता है। और जानवरो के लक्षणों को भी बढ़ाता है। M.P.Flower जी ने चालीस वर्ष तक शराब पीने वालों को जाँच करके यह कहा है की ''मांसाहार पदार्थ खाने से, वह तंत्रिकाओं को उत्तेजित करता है।'' इसलिए वे सभी मे असहन से रहते हैं, मांस अधिक खाते खाते और अधिक शराब के आदी बन जाते है।

निम्न स्थिति मे रहने वाले मनुष्य का स्वभाव, मांसाहार आदत से और भी बढ़ जाता है। उस भयानक मांसाहार को भरपेट खाने के बाद

भी वह असंतुष्ट रहेगा। और खाने की इच्छा के कारण से वह अधिक तंत्रिका तनाव से ग्रस्त होता है। इस तरह का आसहन और भी ज्यादा शराब सेवन करना चहता है।

सही पोषक पदार्थ के बिना आहार ही, शराब पीने के लिए,गरीबी के लिए, अस्वस्तता के लिए , अपराध करने में सहायक होते है। पोषक तत्वों से रहित आहार खाने से चिड़चिड़ापन, असहनों, अशुद्धता का कारण है।

Mr.Bramwell Booth एक सैनिक अधिकारी, शाकाहार क्यों अच्छा है ! मांसाहार क्यों छोड़ ना है ! विवरण दिया है। उन्होंने कहा कि ''शाकाहार पवित्रता के लिए, सतीत्व के लिए, आहार-पान की आदतों पर नियंत्रण के लिए, इच्छाओं पर नियंत्रण के लिए अत्यावश्यक है। बताया गया है कि मांसाहार खाने के वजह से शराबी, अधिक नींद , शक्तिहीन, बदहजमी, कब्ज आदि भिमारियों से दुःखी होते है। दाद, बवासीर, कीड़े, दस्त, तीवृ सिरदर्द, मांसाहार के वजह से होते है, इसके अलावा उन्होंने कहा कि दुनिया में सौ साल से कैंसर तेजी से बढ़ने का कारण जानवरों का आहार अधिक खाने के कारण है।''

''मित व्यय!''

हर तरह से शाकाहार मांसाहार से बेहतर है। और यह कम कीमत मे उपलब्ध होती है। गेहूं, चावल, मक्का और अन्य अनाज जैसे आहार मांसाहार की तुलना से दस गुना किफायती होते हैं। मांस मे आधा वजन पानी होता है। उस आधा हिस्सा पानी का भी मांस की कीमत चुकानी होगी। इस मांसाहार को खरीदने के बजाय, फल, सब्जियां और अन्य कम कीमत में मिलने वाला शाकाहार के कारण आराम से जी सकते हैं।

"घास के लिए कई हजारों एकड़ जमीन पर खेती करने के बजाय, उसमें चावल,गेहूं उगाने से हजारों लोगों का आहार बन सकती है" इस विषय की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अगर इस तरह से खेती किया जाए तो कई लोगों को स्वस्थ काम भी उपलब्ध होता है ।

जानवरों के वध से आने वाला पाप!

इस में सबसे पहला और भयानक अनावश्यक रूप से जानवरों की हत्या करना महापाप है। दुनिया के शहरों में रहने वाले लोग, अच्छी तरह जानते हैं कि उनके बीच में कई मांस की दुकानों मे कितना भयानक व्यापार चल रहा है। दुनिया में कई लोगों का थोक व्यापार मांस से संबंधित है। उन्हें जानना चाहिए कि इसके माध्यम से आने वाला हर रुपया खून से भरा है।

एक जीव के जीवन को नाश करना सर्वदा अपराध है! जानवरों का वध करना बहुत पाप है! क्योंकि बहुत से लोग जानवरों के निस्सहयता से अपने स्वार्थ के लिए, पैसा कमा रहे हैं। वे जानवरों से व्यापार करके, जानवरों का वध करके धन कमा रहे हैं। याद रखिये, जानवरों का वध

करने वाले ही नहीं, उनके साथ व्यापार करने वाले, उनके हिंसा के कारण वाले, खाने वाले, प्रोत्साहित करने वालों को भगवान के सामने अपराधियों के जैसे खड़े होना होगा! जो कोई भी इस कार्य में भाग लेने वाले सभी लोग इस पाप मे भागीदार हैं । सारे दुनिया मे पहचान कानून यह है कि ''औरों से कराया गया अपराध स्वयं किए गये अपराध के समान है।''

''कुछ लोग कहते हैं कि यदि मैं अकेले ही मांस खाना छोड़ दिया तो यह भयानक वध रुकेगा ?'' यह झूठ और कपट बात है। जो लोग हर दिन मांस खाते है, यदि उन्होंने छोड़ दिया तो कुछ दिनों के लिए जानवरों को सजीव रखने वाला होता है ! कितना खाया है यह नहीं, कितना कम खाने पर भी वो अपराध है ! लेकिन मनुष्य अपनी नीच इच्छाओं को नियंत्रित न रख पाने के कारण इस पाप को कर रहे हैं।

इन जानवरों को अन्य प्रदेशों को बेजने में भी बहुत क्रूरता दिखाई देती है।

हम सब्जियां नहीं !
प्राण होने वाले जीव है !

इस अपराध को स्वीकृत करने वाले कहते हैं कि जानवरों को एक ही बार में बिना ज्यादा कष्ट दिए मारा जाता है। लेकिन चाहे जैसे भी

मारा जाए, यह पाप ही है।

"कसाइयों के प्रति मौजूद घृणा भाव!"

जानवरों को वध करने वाले कसाई के साथ करवाने पाप से आने वाले परिणामों के बारे में भी जानना चाहिए। किसी जानवरों का मांस खाने से पहले, यदि आप चाकू या कुल्हाड़ी लें उस जानवर को मार डालो,उस काम मे नफरत, घृणा आपको बहुत जल्दी ही उस काम के लिए, मांसाहार के लिए विमुख कर देगी। यदि बकरी, मुर्गी का मांस चीर कर खाने वाली कोमल महिलाएं यह देख सकती है कि क्या अपना बेटा अगर कसाई के रूप मे यदि बदलता, काम करता है तो जो लोग यह नहीं देख सकते ? उन्हें दूसरों से ऐसा काम करवाने का अधिकार कहाँ है ? जो हम काम नहीं करना चाहते उसे दूसरों पर थोपने का हमें अधिकार कहाँ है ?

''हमने उनसे ऐसा काम करने को कहा है क्या ?'' लेकिन हम उन जानवरों को नहीं मार रहे हैं न ? ऐसे लोग भी है जो कहते है कि वह पाप हमारा कैसे हो सकता है ? तो वो बात बिलकुल असंभंधित है। हम

सभी इस भयानक मांस को खाने के आदत से कुछ लोग खुद को अमानवीय क्रूरो को जैसे बदल कर , यह कसाई काम कर रहे हैं। वे ऐसा काम करने का कारण खाने वाले लोग है।

अशुद्ध काम मे रह कर ,जो क्रूर स्वभाव के आदी हैं वे अन्य विषयों मे भी सहज रूप से पशु प्रवृत्ति से ही रहते है। इसके अलावा वे असभ्यता मे रह कर घर्षणों से रक्तपात मचाते हैं। कसाई जानवर को चाकू से मारता है। यह बहुत भयानक काम है। इसमें आपकी कोई भूमिका है तो, इस अप्रिय काम में सहायता किया तो, तुम्हें जरूर याद रखना चाहिए की उस पाप में आपको भी भाग है।

हम सभी विश्व शांति चाहते हैं। अब जो अशांति है, वह दूर होकर, युद्ध रहित स्वर्ण युग के लिए हम इंतजार कर रहे हैं। आनेवाले अच्छे काल में, उस शुभ समय मे यह जानना चाहिए कि जानवरों को भी हिस्सा होता है। इसके अलावा, यह याद रखना चाहिए कि ''भविष्य शाकाहारियों का हैं।''

भविष्य में शायद बहुत निकट भविष्य में, ये सभी दुर्घटनाएँ जो घटित हुईं, हमें इस काल से बहुत नफरत होगा। हमारे वारिस ''इस भयानक काल'' को विकास रहित अशिष्ट काल को निश्चित रूप से मानेंगे ।

ये सब भी भौतिक से ही संबंधित है। आइए अब इन विषयों को आध्यात्मिक रूप से देखेंगे ।

"आध्यात्मिक कारण !"

इसके नीचे भी दो कारण हैं। यदि पहला हमारे विकास के लिए है, दूसरा महान विकास सिद्धांत है। और शाकाहार क्यों अच्छा है ? मांसहार क्यों अच्छा नहीं है ? यह पहले ही विवरण दिया गया है। उसके आधार पर अब यह प्रश्न ही नहीं उठता कि ''शाकाहार ही क्यों खाना चाहिए ?''

निश्चित रूप से शाकाहार ही खाना चाहिए ।

प्रकृति के विभिन्न स्तरों के बारे में, और हमारे चारों ओर मौजूद अज्ञात लोकों के बारे में, मैंने पहले ही कई पुस्तकों में, अनेक प्रवचनों में विस्तार से विवरण दिया है। मैंने यह भी बताया है कि उच्च स्तरों से संबंधित तत्व मनुष्य के भीतर अंतर्निहित रूप में मौजूद है, इसीलिए मैंने विवरण दिया कि वह एक वाहन की तरह वहाँ के भावों को ग्रहण करके, उसी के अनुसार काम करता है।

''उच्च शरीर होने वाला मनुष्य, भौतिक शरीर के द्वारा लेने वाला आहार का इन उच्च शरीरों पर कोई प्रभाव दिखता है ?'' यानी जरूर होता है! मनुष्य मे भौतिक पदार्थ का सूक्ष्म मानसिक पदार्थों से करीबी मनुष्य होता है। कितना करीब संबंध है कि एक के अंदर एक समाई हुई होती है।

सूक्ष्म शरीर का पदार्थ कई प्रकारों में, विभिन्न घनत्वों के साथ होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी का सूक्ष्म शरीर खुरदरा हो, अशिष्ट कोशिकाओं से निर्मित हो, और एक बहुत ही नाजुक और परिशुद्ध पदार्थ से बना होता है। यदि सूक्ष्म शरीर स्थूल हो जाये तो वे विशेष रूप से नीच इच्छाओं और आवेशों के आगे झुक जाते हैं। लेकिन जिसका सूक्ष्म शरीर नाजुक, परिशुद्ध पदार्थ से निर्माण किया हो । वे शुद्ध ,नाजुक भावनाओं के लिए, आशयों के लिए तुरंत जवाब देते है । इसलिए जो भी व्यक्ति अपने भौतिक शरीर का निर्माण अशिष्ट, अशुद्ध पदार्थों से करते हैं, वे अपने सूक्ष्म शरीर में भी उन्ही गुणों को अपनाते हैं।

हम सब देख रहे हैं कि मांस के प्रति अत्यधिक जिह्वा की चंचलता होने वाले अपने शरीर को असंतुलित रूप से बढ़ाते हैं। ऐसा नहीं है कि केवल भौतिक शरीर ही कुरूप दिखता है, यहां तक कि हमारे लिए अदृश्य सूक्ष्म, मानसिक शरीर जो अच्छी स्थिति में नहीं हैं। अशुद्ध सूक्ष्म मानसिक

शरीर हमारी आँखों के लिए अदृश्य होने पर भी , विकसित योग दृष्टि होने वाले को तुरंत दिखाई देता है ! एक योगी जो उच्च शरीरों को देख सकता है, वह तुरंत निचले शरीर की अशुद्धता के कारण उच्च शरीरों पर प्रभाओं को देख सकता है। वह तुरंत शुद्ध शाकाहारी या मांसाहारी जिन्होंने लिया उन के बीच अंतर देख सकता है। आइए देखें कि यह अंतर मनुष्य का विकास पर कैसे प्रभावित करता है।

''अशुद्ध वाहन!''

आत्मा शक्ति का उपयोग करने के लिए, मनुष्य को अपने सभी शरीरों को जहां तक संभव हो विकास करना चाहिए। दिव्य स्थिति तक पहुँच ने मार्ग के लिए , जहाँ आत्मा को देवताओं द्वारा शिक्षण दिया जाने वाला उच्च स्थिति है। इस स्थिति तक पहुंचने के लिए सबसे पहले मनुष्य को अपने निचले शरीरों को खुद के अधीन मे रखना सीखना होगा। इसलिए आत्मा को अनुमति ना देने वाले कोई भी विचार, कोई भी भाव, उनमें नहीं आते। सभी शरीरों को उन्नत सामर्थ्य से होना चाहिए।

सफाई से, स्वच्छता से होना चाहिए । जब तक मनुष्य अशुद्ध भोजन अपने शरीर में लेता रहेगा, तब तक यह कैसे संभव नहीं है ? शुद्ध भोजन खाने से इंद्रियों की ग्रहण शक्ति भी अधिक होती हैं। जो व्यक्ति मांसाहारी से शाकाहारी बन गया है उसका स्वाद जल्दी चख लेता है। जो मांसाहार से शाकाहारी बन गया है, उसे जल्द ही पता चलेगा उसकी स्वाद और सुगंध जानने का गुण पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

इसके अलावा, वह विभिन्न प्रकार के पदार्थों की नाजुक सुगंध में अंतर भी समझ सकता है।

यही विषय उच्च शरीरों के साथ भी होता है । भौतिक शरीरों जब अशुद्ध पदार्थ लेते है, तब उच्च शरीरों की ग्रहण शक्ति भी स्वच्छ नहीं

होता ।इसलिए आत्मा को उच्च शरीरों का उपयोग करना बहुत कठिन हो जाता है । जो लोग योग विद्या सीखते हैं वे जानते हैं कि यह यादर्थ है। प्राचीन काल में योग विद्या के रहस्यों को जानने वाले सभी शाकाहारी थे। मांसाहार खाने वाले अपनी प्रगति में स्वयं ही रुकावट लाने वाले बन जाते हैं।

भौतिक स्तर पर ही नहीं, उससे भी उच्च दशाओं में शरीर की अपेक्षा मन को, आत्मा को अधिक महत्व होता है। लेकिन तो भौतिक, आध्यात्मिक दोनों को उच्च रूप से होना चाहिए। आत्म-निग्रः के लिए, आत्मा-विकास के लिए अनेक तकलीफों का सामना करना होगा । शुद्ध मन, शुद्ध शरीर से ज्यादा मदद करता हैं। लेकिन शरीर भी बहुत उपकार करता है।इसलिए शरीर की उपेक्षा नहीं किया जाना चाहिए। जो भी हमारे विकास मे रुकावट होता है, हमें उसे निश्चित रूप से छोड़ देना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि मांसाहार भौतिक शरीर को एक बेकार उपकरण के जैसे बना देता है। ऐसा होने के कारण निचले स्तर से जुड़ी इच्छाएँ और भी प्रबल हो जाती हैं, जिससे आत्मा के मार्ग में कठिनाइयाँ होती है।

इन बेकार, अशुद्ध पदार्थों को भौतिक शरीर में ग्रहण करने के द्वारा मनुष्य एक भारी , अपवित्र सूक्ष्म शरीर का निर्माण करता है। उस नीच सूक्ष्म शरीर के साथ मरने के बाद अगला जन्म का पहला भाग मे बिताना पड़ेगा । इस तरह के भारी पदार्थ से शरीर निर्माण करने के वजह से सभी तरह के सभी प्रकार के अवांछनीय व्यक्ति उसके पास आकर उसके शरीरों को निवास स्थान बना कर अपनी नीच इच्छाओं को पूरा करने के लिए उसे प्रोत्साहित करते रहते हैं। उसके पशु ईच्छाएँ यहाँ बड़ते ही नहीं बल्कि, मरने के बाद भी वह उनसे बाहर निकलने के लिए अधिक मेहनत करता

है। हम जिनसे पूरी तरह स्वेच्छा को पाना चाहते हैं, उन को तीव्र करने वाला इस मांसाहार को तुरंत, हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए ।

"प्रकृति के प्रति मनुष्य का कर्तव्य!"

प्रकृति के प्रति मनुष्य का कर्तव्य सबसे महत्वपूर्ण है। हर धर्म, मनुष्य को भगवान की ओर उसे स्वयं को बदलना होगा, अच्छे के ओर बदलना होगा, विकास पथ की ओर आगे बढ़ना सिखाता है। इस भौतिक दुनिया में पाठों को सीखने के लिए हमें यह समझना चाहिए कि जैसे हम इस शरीर में हैं, उसी कारण से जानवरों ने भी शरीर धारण किया है। हमें यह जानना चाहिए कि जानवरों में भी भागवान है, सभी प्राणियों मे भी दिव्यता है। इसलिए वे हमारे भाई हैं! हमें यह जानने है कि अपनी जिह्वा चपलता संतुष्ट करने के लिए उन्हें मारने का अधिकार नहीं है।

हमने इस पशु वध को इस हद तक पहुँचा दिया है कि अब हम पशुओं को अपनी आँखों के सामने से गायब होने की स्थिति ला रहे हैं। क्या ''विश्व भााईचारा'' का यही मतलब हैं। क्या यही है करुणामय संसार

जिसकी हम अपेक्षा कर रहे हैं ? इस तरह के क्रूर पशुवध का प्रभाव उच्च स्तर पर गौर से देखेंगे तो – इन मारे गए जानवरों के विचार, भावनाएँ, डर, पीडा, और उनके प्रति हुए अन्याय हमें किस तरह घेर लेता है, यह स्पष्ट रूप से महसूस होता है। हमारे आस–पास का पूरा वातावरण इनसे भरा हुआ है। चिकागो और ऐसे ही अन्य नगरों के चारों ओर कुछ मील तक ऊपर उल्लेखित ''भयानक आभा (Aura)'' जिनको अलौकिक शक्तियां होने वालों को दिखाई देती है, ऐसा मैंने उन लोगों से जाना है। Mrs. Ane Besent ने कहा कि इस विषय को कई सालों के पहले इंग्लैंड में कहा।

चिकागो पहुँचने से पहले ही उसके चारों ओर फैली हुई भयानक आभा (Aura) को देखकर उन्हें दु:ख हुआ और उन्होंने कहा, ''हम कहाँ हैं ? वातावरण में इतनी भयानक स्थिति किस कारण से उत्पन्न हुई ?'' ऐसा उसने खुद से प्रश्न किया। Mrs. Ane Besent जैसे भले ही हर कोई इसे न पहचानता हो, वे अनजाने में इसकी वजह से होने वाले दुष्परिणामों का अनुभव कर रहे हैं।

''अदृष्य भयानक परिणाम !''

चिकागो शहर में जानवरों की हत्या के परिणाम, उस शहर में बहुत से लोग नसों की कमज़ोरी, मानसिक रोग जैसी बीमारियों का कारण! यह जानते नहीं है कि प्रतिदिन कितने हजार जानवर मारे जा रहे हैं लेकिन वह संख्या बहुत अधिक होगा ।

यह याद रखना चाहिए कि हमारी तरह शाश्वत पुनर्जन्म लेने वाले भले ही व्यक्तियों के रूप में नहीं जानवरों को भी निश्चित जीवन न केवल भौतिक रूप से, सूक्ष्म स्तर पर भी कुछ समय तक जीते है । यह याद रखना चाहिए कि उनका पीड़ा, भय, उनके साथ जो अन्याय हुआ उस को उलटा परोसने के लिए वे सब सूक्ष्म स्तर में मौजूद होते है। हमें यह जानना

चाहिए की कसाई की दुकानों में, जहां जानवरों को मारा जाता है, कितना भयानक वातावरण होगा । दिव्य दृष्टि होने वाला व्यक्ति जानवरों की आत्माओं को देख सकता हैं। वह यह भी जान सकता है कि मारे गए जानवरो की भावनाएं , संवेदनाएं कितनी शक्तिशाली होते हैं ? वह यह भी समझ सकता है कि वे सभी अलग-अलग स्थानों से मानव जाति पर कितना प्रभाव डालती हैं। वे कम निरोधक शक्ति वाले बच्चों पर ये अपना दुष्परिणाम अधिक दिखाते हैं। ऐसे भयानक शहर में बच्चों का पालन-पोषण करना बहुत असहनीय है। क्योंकि वहां का पूरा वातावरण यह खून की लपटों से भरी होती है। सिर्फ भौतिक स्तर ही नहीं, सूक्ष्म स्तर पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा ।

शवघर से आने वाला घिनौना, बदबू वहाँ के चारों ओर के वातावरण को भयानक रूप से घेर लेता है। ये कसाई की दुकानें छोटे बच्चों के सिर्फ शरीर ही नहीं बल्कि, उनकी आत्मा को भी उपद्रवों को लाता है। छोटे बच्चों को इन क्रूर कामों के लिए उपयोग करने के वजह से उनके सभी विचार हत्या की ओर मुड़ जाते हैं।

इसके अलावा, यहां संवेदनशील को बच्चों भी हैं जो इंसानों की क्रूर प्यास के लिए , मासूम जानवरों की चीखों के बीच मे हो रहा भयानक युद्ध को सहन नहीं कर पाते। एक चर्च फादर ने एक लड़के को कसाई दुकान में काम पर लगा दिया, वह रोज़ उस भयानक काम को न कर पाने के कारण, न देख पाने के कारण बीमार पड़ गया, कमजोरी से ग्रसित हो गया, न खा सका, न सो सका, अत्यंत पीड़ा में रहा और अंत में उस फादर के पास जाकर कहा, ''मैं भले ही भूख से मर जाऊं, लेकिन उस खून के दलदल में मैं काम नहीं कर सकता'', ऐसा मैंने पढ़ा। उस पशु वध ने लड़के को सोने नहीं दिया। कई बच्चों की यही स्थिति है। वे इसी काम में

रहकर सुन्न हो जाते हैं, और किसी दिन बकरी के बच्चे या सूअर का गला काटने के बजाय, इंसान को ही मार डालने की स्थिति तक पहुँच जाते हैं। तब हम सोचते हैं कि हमने उसे गलत काम की सजा देकर ''न्याय किया है।''

कसाई दुकानों के आसपास बच्चों का अवलोकन करके एक महिला को एहसास हआ है कि मारने की खेल को उस के अलावा कई अन्य खेल नहीं है। जानवरों के प्रति कोई अन्य संबंध नहीं है। केवल मरने वाला, मारने वाला की बीच का संबंध होता है। हर दिन हत्या करना ही एक महान काम की तरह आपस में बोलते रहते हैं।

ईसाई उन बच्चों को प्रशिक्षित देने के बाद उस जगह पर अधिक हत्याएं होती है तो आश्चर्य व्यक्त करते हैं। फिर भी ईसाई प्रार्थना करते हैं, कीर्तन गाते रहते हैं, जैसे कि बच्चों के साथ ऐसा कुछ बुरा नहीं हुआ हों। निश्चित रूप से मांस खाने की आदत हमारे भीतर की नैतिकता को भ्रष्ट कर देती है। ऐसे माहोल में भावी नागरिकों का पालन-पोषण करना किस हद तक उचित है ? भौतिक जगत में यह बहुत भयानक विषय है। और योग दृष्टि से देखा तो यह बहुत ही तीव्र परिस्थिति है। योगदृष्टि होने वाले यह देख सकते हैं कि ये शक्तियाँ मानव जाति पर किस प्रकार का प्रभाव डाल रही हैं, और ये उनमें क्रूरता को किस हद तक तीव्र कर रही हैं।

इन मासूम जानवरों का वध दुनिया पर उनका प्रभाव दिखता है जिसे कई लोग समझ नहीं पाते हैं। वातावरण में निरंतर बिना कारण के भय और बेचैनी बनी होती है। आपके कई बच्चों मे अनावश्यक अकथनीय भय से रहेंगे। बिना यह जाने कि वे क्यों डर रहे हैं, डरते है। अंधेरे से डर लगना, कुछ क्षणों के लिए भी अकेले रहने पर डर लगना जैसी बातें होती रहती हैं। इन सबका कारण मारे गए प्राणियों की चीखें हैं। आप यह जाने

बिना ही यह सब आपके मासूम बच्चों को प्रभावित करता है, आप अपने भाइयों (जानवरों) को हत्य कर रहे हैं। निश्चित रूप से एक अच्छा समय आएगा।तब हम इस भयानक परिस्थिति से हम मुक्ति पा सकेंगे, हमारी सभ्यता पर लगे काला धब्बे को निकाल कर, उन्नत दशा तक पहुंचने के लिए भय से, द्वेष से स्वेच्छा पाएंगे ।

''आने वाला अच्छा वक्त !''

यदि स्त्री-पुरुषों मे सही दृष्टि होने पर, जल्दी ही हम सभी इस कसायित्व से स्वेच्छा पाएंगे । यदि सामान्य व्यक्ति को करुणा के बारे में जानता है तो, उतना क्रूरता से व्यवहार नहीं करता । वह यह नहीं जनता है कि वह भी इस भयानक अपराध का हिस्सा है। तो सच्चाई सच्चाई ही होता है! उनसे कोई बच नहीं सकता! जो कोई भी इस क्रूरता को जारी रखने में मदद कर रहा है, उन सभी को बिना किसी संशय के इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी । आप सोचोंगे कि ''हम बहुत साधारण लोग हैं। इस परिस्थिति को कैसे ठीक कर सकते हैं ?'' लेकिन अगर साधारण लोग भी बड़े हो जाएं और अधिक नागरिकता विकसित करें, तो वे उच्च स्तर

तक नागरिकता स्थापित कर सकते हैं।

न केवल मनुष्य के लिए बल्कि अन्य निचले स्तर के जीवों के लिए भी स्वर्ण युग आने वाला है। उस काल में मनुष्य जानेंगे कि अपने भाइयों (जानवरों) के प्रति अपना कर्तव्य को जानकर, उन्हें नाश नहीं करना चाहिए, उन को मदद करना चाहिए। इन जानवरों को प्रशिक्षित करके ताकि उनसे द्वेष के बजाय प्यार को, भक्ति को, दोस्ती को, सहकार को प्राप्त करेंगे । प्रकृति की सभी शक्तियां बिना किसी संदेह के विश्व भाईचारा के साथ मिलकर अंत तक काम करने का समय आने वाला है! क्योंकि हम सभी उस महान भगवान के संतान हैं।

कम से कम इस प्रयोग को करके देखेंगे। इन भयानक अपराधों की जटिलता से स्वेच्छा को पाकर, हर निर्मल हृदय की अभिलाषा होने वाले शांत, प्रेम से परिपूर्ण युग के निकट पहुंचने के लिए, हम सबको अपनी सीमा में रहकर यथासंभव प्रयास करना चाहिए। उस उज्ज्वल भविष्य के लिए हम सब इस प्रकार के प्रयास करने के लिए निश्चित रूप से तैयार रहेंगे।

-C.W.लीडबीटर

हमें स्वयं को शुद्ध करने के लिए हमें अपने विचारों को, हमारे कामों को, हमारे आहार को शुद्ध करना चाहिए । ऐसा करने से हम एक उदाहरण जैसे रहकर प्रस्तुत करते हैं भगवान के प्रेम को, करुणा को विस्तार करेंगे । इसलिए आइए इस पशुत्व को, क्रूरता को चोड देंगे ।

सभी आनंद से जिएंगे। इसके लिए हर किसी को इन दो को ही करना होगा। (1) हिंसा छोड़ो । इसका मतलब यह है कि जीवहिंसा,पशु वध, मांस भक्षण नहीं करना चाहिए। (2) हंसा को पकड़ो। इसका मतलब यह है कि सांस पर ध्यान केंद्रित करके ध्यान करना चाहिए। यही आनंदमय जीवन का मार्ग है।

– ब्रह्मर्षि पत्रीजी

''ध्यान - मांसाहार''

- तटवर्ती वीरराधव राव

ब्रह्मर्षि पत्रीजी दुनिया को ध्यान जगत बनाने के संकल्प के साथ पूरा दुनिया का पर्यटन कर रहे हैं । ध्यान करवाने के द्वारा हर एक मे गुरे गुणों को निकालकर उन को समाज सेवा मे निमज्ञ कर रहे हैं।

उनके पर्यटन मे वे दो विषयों को अधिक जिक्र करते हैं । वे 1.हिंसा को छोड़िए, 2.सांस पर ध्यान रखिए इनके द्वारा पत्रीजी ने सभी को यही संदेश दिया है कि

1. मांसाहार छोड़ कर जीव हिंसा को रोकिए!

2. साँसों पर ध्यान रखकर ध्यान करिये । योगि जैसे बदलिए !

वे मुख्य रूप से इन दोनों विषयों को कह रहे हैं। इसका अर्थ है कि मांसाहार छोड़ने से शारीरिक शुद्धि होती है, ध्यान करने से मन शुद्धि होती है, इन दोनों से हर कोई अब ''यथास्थिति से उच्च स्थिति'' पा सकते हैं इन विषयों को वे बार बार बोल रहे हैं ।

लेकिन कई पीढ़ियों से यह मांसाहार एक परंपरा के रूप में चला आ रहा है, इसलिए बहुत से लोगों को न तो यह गलत लगता है, न यह भाव आता है कि हम किसी जीव की हिंसा कर रहे हैं, और न ही हम कोई पाप का कार्य कर रहे हैं। इसलिए कई हजारों परिवारों ने मुर्गी, बकरी, मछली, झींगा आदि जैसे जीवों को पालना अपने जीवनाधार बना लिया है।

सभी प्राणियों को पालन पोषण करके मार रहे है वे बिना यह भावना के इस एक पेशे के रूप में अपनाया है। जो खाने वाले हैं, वे भी यह सोचकर नहीं खाते कि वे एक मरे हुए शरीर यानी शव को खा रहे हैं, बल्कि वे इसे सामान्य भोजन समझकर ही खा रहे हैं।

यदि आप गौर से देखे तो समाज मे न तो गुरुओ, न तो बुजुर्गो न

मांसाहार के बारे में वे अपने उपन्यासों मे, प्रसंगों मे, बोधों में अधिक जिक्र नहीं करते हैं। लेकिन ब्रह्मर्षि पत्रीजी ने हर प्रवचन में, हर जगह मांसाहार के बारे में जिक्र करते हुए यही मनुष्य के पतन का कारण है। यह मानव का प्रगति में भी अवरोध है। इससे बढ़ा कोई पाप कार्य नहीं है। इसके वजह से अनेक अनर्थ होते है ऐसे कहते हुए सभी से मांसाहार सबके साथ मांसाहार छुड़वा रहे हैं।

इसलिए हमें मांसाहार के बारे में थोड़ा जानने की आवश्यकता है । भगवद्गीता मे, पुराणों मे, शास्त्रों में जीवहिंसा के बारे में महात्माओं, योगियों से कहे गए विषयों को हम जानेंगे ।

चित्तूर जिला के एरपेडु गांव में स्थित व्यासाश्रम के संस्थापक सद्गुरु मलयालस्वामी जी से लिखित ''ग्रंध शुष्क वेदांत तमो भास्करं'' मे अहिंसा के बारे में कही गई कुछ विषयों के बारे में जानेंगे ।

1. ''श्री नारद मुनि ने बताया कि भूत दया के बराबर कोई पुण्य नहीं है, प्राणी पीड़ा से बड़ा कोई पाप नहीं है।''

2. महान महर्षियों ने कहा, ''मन से, बातों से, कर्म से सभी सर्व कालो मे, सर्व अवस्थावो मे किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुंचाना ही अहिंसा है।''

3. ''अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं है; अहिंसा के समान कोई तपस्या नहीं है; अहिंसा के समान कोई महान दान नहीं है।'' तपस्वि मुनि श्रेष्ठों ने कहा है ।

4. ''जिनके पास जीवकारुण्य व्रत है, उनके लिए तप, दान, व्रत, तीर्थयात्रा आदि कोई काम नहीं है ।''

5. ''अश्वमेध यज्ञों मे जो दान फल है, जो सप्तसागर तीर्थ स्नान का फल है, जो गोदान षोडश महादानों का फल है, यह सभी अहिंसा का

करोड़ों फलों मे एक भाग भी नहीं है।''

6. ''अहिंसा से बेहतर कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है; हिंसा से बेहतर कोई अधर्म नहीं है ।''

भगवत गीता मे:

श्लो: **आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।**
सुखं वा यदि वा दु:खं स योगी परमो मत: ।। (6-32)

ता: ''हे अर्जुना! जो समस्त प्राणियों के सुख-दु:ख को अपने सुख-दु:ख के समान देखता है, वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है,'' यह मेरा दृढ़ राय है। हमें यह जानना चाहिए कि जिस तरह अपने शरीर को हुई पीड़ा कितनी कष्टदायक होती है, उसी तरह सभी जीवों की पीड़ा भी उनके लिए उतनी ही कष्टदायक होती है ।

यहा हमें एक विषय के बारे सोचेंगे ।अगर एक व्यक्ति एक मुर्गे का गला काटते समय गलती से उसकी उंगली कट गया तो वह ''अब्बा, अम्मा'' कहते हुए ज्यादा दुखी होता है। और अगर मुर्गे को काटेंगे तो उसे कितना पीड़ा होता हैं ? वह भी हमारे जैसा जीव ही है ना ?

श्लो: **तानहं द्विषत: क्रूरान्संसारेषु नराधमान् ।**
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥ (16-19)

ता : ''समस्त जीवों मे आत्मा स्वरूप जैसे होने वाला जैसे निवास करने वाला मुझे हिंसा करने वाले मैं क्रूर दुष्ट लोगो को मै जन्म मृत्यु से भरे दुख दाई, भयानक संसार मे बार बार गिराकर अत्यंत दुख दायक असुर योनियों मे जन्म दिलाऊँगा ।''

श्लो : **आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।**
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम ॥ (16-20)

ता : ''हे अर्जुना! ऐसे असुर योनि में जन्म लेने वाले जो प्राणी

हिंसक और मूढ़ होते हैं, वे हर जन्म में मुझे प्राप्त करने का जाने बगैर मार्ग हैं, वहाँ से अधोगति को प्राप्त करके, लंबे समय तक अत्यंत दु:ख से भरे भयानक नरक को प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार स्वयं श्री कृष्ण परमात्मा ने गीता में ''जीव हिंसा'' के विषय में बताया है।

एक और विषय! जब कोई इंसान मर जाता है तो उसे शव कहकर चाहे कितना महान हो पहले घर के बाहर रख देते हैं। वहाँ भी अधिक समय तक रख जाए तो बदबू आएगी और कीड़े लग जाएंगे सिर्फ उस घर वालों को नहीं, बल्कि आसपास लोगों को भी अशुभ संकेत भी है, इसलिए दहन करते है, दफनाने की कोशिश करते है। यहां तक कि जो लोग शव को देखने आए थे, वे भी स्नान के बिना घर के अन्दर नहीं जाते। और शव को देखने पर इतना अशुभ संकेत मानते स्नान करके शुद्ध कर रहे है ना? जानवर को मारे तो वो भी शव ही है ना? और उस शव को खा रहे हैं। ये दोष क्या करने से जाएगा । इसलिए यह सोचना चाहिए कि शव को खाना कितना उत्तम है।

शवों को केवल ताबूतों में रखा जाता है, पवित्र मानव शरीर में नहीं रखा जाता है ।

रामायण में जीव हिंसा के बारे में:-

जब आंजनेयस्वामि ने लंका नगरी में सीता माता को देखकर राम के पास वापस लौटे तो, श्री रामचन्द्र ने उनसे विषयों के बारे मे बताने को कहा। तब अंजनेयस्वामी ने, लंका नगर के वैभव का वर्णन कहते हुए राक्षसों ने शिव के भक्त हैं, वे निरंतर शिव ध्यान करते हैं,भगवान राम ने अपना धनुष नीचे गिराकर कहा कि, ''मै ऐसे शिव भक्तों का संहार नहीं करूँगा।''

तब सुग्रीव ने इशारा किया, तो विषय को समझकर आंजनेयस्वामी ने तुरंतु कहा कि, ''वे सभी शिव-भक्त होने के बावजूद राक्षस परम दुष्ट हैं, वे जीव-हिंसक हैं, मांस भक्षक है'' तब भगवान राम ने छोड़ा हुआ धनुष को वापस ले लिया और कहा मैं राक्षसों का संहार करूंगा, क्योंकि राक्षस कितने भी शिव भक्त हो, शिव ध्यानी हों, वे जीव हिंसा वाले, मांस भक्षक हैं।

इसके आधार पर हम रामायण से भी यह सीख सकते हैं कि यदि ''कोई भी, वे कितने भी भक्त हो, पूजा, भजन, प्रार्थना, नाम जप करने पर भी , कितना भगवत ध्यान करने पर भी, मांस भक्षण करने वाले भगवान के दंड का पात्र होगा।''

योगि वेमना की तेलुगु कविताओं का तात्पर्य:-

1) ता: ''जो पक्षियों को पकड़ कर, उन्हें हिंसा करके, अपना पेट भरने के लिए उन्हें मार कर, पकाकर खाने वाले को चंडाल कहते है।''

2) ता: ''दोम्मा बीमारी जाने के लिए देवताओं को जानवरों की बलि दी जाती हैं। देवी का नाम बोलके वे खुद खाने के लिए बलि देते हैं। इसके अलावा और कुछ नहीं'' ऐसा उन्होंने कहा ।

3)ता: वेमना ने कहा कि यदि ''एक प्राणी दूसरे प्राणी को मारकर किसी अन्य प्राणी को परोसने पर खाने वाले बलवान बनता है । लेकिन जीव को मारकर, जीव हिंसा करने वालों को कभी भी मोक्ष नहीं मिलता। अर्थात दु:ख दूर नहीं होगा।''

इसके अलावा बाइबिल मे पशु वध के बारे में ईसु प्रभु का आदेश इस प्रकार है।

"Thou Shalt Not Kill" (10 आज्ञाओं में 5 वीं आज्ञा)

''**तुम किसी को मत मारो ।**''

वर्धमान महावीरः– ''**जियो, जीने दो ।**''

पवित्र खुरान का संदेशः–''**अल्लाह मांस को, खून को पसंद नहीं करता ।**''

इस प्रकार सभी महात्माओं ने पशुवध, जीव हिंसा, मांस भक्षण के विषय में मनुष्यों को अपना संदेश दिया है। लेकिन हम उन्हें ध्यान दिए बगैर गलत कर रहे है ।

मानव शरीर शाकाहार निर्मित है। इसके अलावा जानवरों में भी कुछ ऐसे जानवर शाकाहार निर्मित ही होते हैं। वे गाय, भैंस, हिरन, हाथी, जिराफ़ आदि हैं। ये सभी जानवर आहार उपलब्ध न होने पर मरने को तैयार हो जाते है , लेकिन ये मांस को नहीं छूते। उनसे ज्यादा उन्नत मानव इस विषय को क्यों नहीं सोच रहा है ?

इसलिए मांसाहार को छोड़िए। पशुवध रोकिए। जीव हिंसा मत करो । पत्रिजी के संदेश का पालन करना चाहिए। उनके मार्ग पर चलना चाहिए, ध्यान करना चाहिए । जीवन को धन्य करना चाहिए।

“जानवरों के, वृक्षों के बीच बहुत अंतर है!”

-तटवर्ती वीरराधव राव

ब्रह्मर्षि पात्रीजी अपने उपन्यासों में प्रमुखता से दो विषयों का जिक्र करते हैं। वे “मांसाहार छोड़ देना, सांस पर ध्यान केंद्रित करके ध्यान करना चाहिए।” इन में दूसरा विषय को सभी लोग अच्छी तरह से समझ रहे है। लेकिन मांसाहार छोड़ना बहुत लोगों को कठिन होती है। क्योंकि इसे कोई भी पाप कार्य जैसे सोचता नहीं । इसके अलावा सभी जीभ के स्वाद से आदी हो गए हैं , उसी को महत्व दे रहे हैं। लेकिन कोई भी पाप के बारे में, पाप कर्म के बारे में, दुर्भर, दुखपूरित परिणामों के बारे में नहीं सोच रहा हैं।

इस तरह मांस भक्षण करते हुए, जीव हिंसा करते हुए , मुंह के स्वाद को महत्व दे रहे हैं। अगर कोई भी मांसाहार को छोड़ दो कहते है तो, वे अपना सुख को छोड़ नहीं पाते, अपनी आदत को छोड़ नहीं पा रहे हैं, कहने वालों की आलोचना कर रहे हैं। कुछ लोग सोचते है कि ध्यान करना हो तो मांसाहार को छोड़ ना पड़ेगा, इसलिए मांसाहार को छोड़ने के बजाय ध्यान को ही छोड़ रहे हैं। इनका इरादा यह है कि अगर ध्यान करें तो मांसाहार छोड़ना पड़ेगा, लेकिन वे यह नहीं जान पा रहे हैं कि ध्यान करें या न करें, मांसाहार को तो निश्चित रूप से छोड़ना ही चाहिए। क्योंकि यह एक पाप कार्य है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पत्री जी ने मांसाहार मना कर रहे है, डाँट रहे हैं, लेकिन हमारे गुरू ने ध्यान करने को कहा, लेकिन मांस छोड़ने को नहीं कहा। इसीलिए हम एक अलग तरह का ध्यान कर रहे हैं, इस तरह पिरामिड मास्टर्स से बोल रहे है ।

और कुछ लोग कहते हैं कि ? भगवान ने इन जानवरों को जन्म हमारे लिए किया है। उनका तर्क है कि यदि हम मांस नहीं खायेंगे तो यह पृथ्वी जानवरों से भर जाएगा ना ?

इसके अलावा, शाकाहार खाने के लिए बोल रहे हैं। शाकाहार का मतलब अनाज, फल, सब्जियाँ है ना ? ये सभी पौधों, पेड़ों से आते हैं ना ? पेड़ों मे, पौधों में प्राण है ना ? अगर उन्हें खाएंगे तो वो पाप ही है ना ? शाकाहार खाकर आप भी पाप कर रहे हैं ना ? यदि हम जीवित पेड़-पौधों को

कट ते है, हम मांसाहार खाने में क्या बुराई है ? उनका तर्क है कि उसमें और इसमें क्या अंतर है ?

कुछ लोग ऊपर से कुछ न कहें, लेकिन अंदर ही अंदर संदेह करते रहते हैं। लेकिन अगर आप थोड़ा सोचें तो ये सारे तर्क अपने काम को सही करने के अलावा और कुछ नहीं हैं।

अगर गौर से देखें तो मांसाहार और शाकाहार में बहुत फरक है।

''क्योंकि वृक्षों, जानवरों में बहुत अंतर होता है। लेकिन मनुष्यों, जानवरों के बीच बहुत नज़दीकी संबंध है।''

पहले हम मनुष्यों , जानवरों के बीच समानताओं को देखेंगे। जानवर भी मनुष्यों की तरह घूम सकते हैं। जैसे मनुष्य खाते हैं, वैसे ही जानवर भी अपने पसंदीदा भोजन खा कर आनंद लेते हैं। जैसे मनुष्य सोते हैं, वैसे ही जानवर भी सोते हैं। मनुष्यों की तरह जानवर भी संभोग में भाग ले रहे हैं। मनुष्यों की तरह संतान पा रहे है। मनुष्यों की तरह जानवरों में भी बच्चों पर ममत्व होता है। वे भी अपने पसंदीदा को देखकर आनंदित हो रहे हैं। अगर कुछ पीड़ा होता है तो वे मनुष्यों के तरह रोते हैं। मनुष्यों की तरह जानवरों में भी मृत्यु का अत्यधिक भय है। अगर कोई किसी जानवर को मारने की कोशिश करेगा तो मनुष्यों की तरह विरोध करेगा। बेबसी की हालत में जैसे इंसान चीखता-चिल्लाता है। वैसे ही भयानक आवाजें करते हैं। जिस तरह इंसान का शरीर मरने के बाद सड़ कर बदबु आता है, वैसे ही जानवरों का शरीर मरने के बाद सड़ कर बदबु आता है। यह देखने में भी बहुत घृणा होता है। ये सब हम देख रहे हैं। इस तरह हम जानवरों के, मनुष्यों के बीच बहुत नजदीकी संबंध दिखता हैं।

लेकिन जानवरों के, ''वृक्षों के बीच बहुत अंतर हैं। क्योंकि जानवरों की तरह वृक्ष चरते नहीं । एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकते । वैसे ही जानवरों की तरह वृक्ष आवाज़ नहीं करते, वैसे ही जानवरों की तरह, वृक्ष बच्चे पैदा नहीं कर सकते, इस तरह कई अंतर हैं। जानवरों के शरीर का कोई भी अंग जैसे पैर या, पूँछ या और कोई भी अंग को काट देने पर वापस नहीं आता है, लेकिन यदि वृक्ष की शाखा काट दिया जाए तो बगल से और एक शाखा आता है ।''

वृक्षों में जीव होने पर भी, उनके जानवरों के बीच बहुत अंतर हैं। इतना ही नहीं, कोई भी शास्त्र यह नहीं कहता कि शाकाहार गलत है जैसे सब्जियां, फल, अनाज आदि। इतना ही नहीं, फलों में जीव शक्ति होने पर भी वे जड़ है, उनमें जीव जानवरों की तरह मन, बुद्धि, चित्त, ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं है। जब इन्द्रियाँ नहीं होते तो दुःख नहीं होता ।

वृक्षों में भी चेतना होती है लेकिन वृक्ष चेतना इतनी विकसित नहीं होती । इसलिए, यदि हम किसी वृक्ष को काटते हैं, तो वह विरोध नहीं करता है, यदि किसी जानवर को काटने की कोशिश करते हैं, तो वो विरोध करना, चिल्लाना हम देख रहे हैं। वैसे ही बीजों मे से अंकुर होने वाले अनाज, दानों के फसलों को कहते है। जिस प्रकार मनुष्य के नाखून और बाल काटने से कोई दर्द नहीं होता, उसी प्रकार अनाज, दाने के फसलों को काटने पर भी कोई दर्द नहीं होता।

इतना ही नहीं, अनाज, दानों के फसल अधिकतर सौर ऊर्जा से तैयार होती हैं। इनमें सौर ऊर्जा अधिकतर होने के कारण इन्हें खाने वालों को ज्ञान प्राप्त होता है।

इस तरह वृक्षों, जानवरों के बीच कई अंतर हैं। इसलिए जानवरों की तुलना वृक्षों से नहीं की जा सकती। ''शाकाहार, मांसाहार में बहुत बड़ा अंतर है।''

इतना ही नहीं, हम जिनको देवता मानकर पूजा कर रहे हैं, उन्होंने कभी शाकाहार को पाप नहीं कहा। दुनिया के सभी महान लोग शाकाहारी ही हैं।

इसके अलावा, मृत जानवरों के शरीर भी मानव शरीर की जैसे सड़ जाते हैं। बदबु आता है। लेकिन मरे हुए वृक्ष भी बहुत समय तक टिके रहते हैं । सड़ते नहीं। बदबू नहीं आती । मनुष्य इनका उपयोग घरेलू आवश्यकताओं के लिए करते हैं, जैसे कि चौखट, दरवाजे और खिड़कियाँ। वे कई वर्षों तक होते हैं।

आइए भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक को देखेंगे ।

श्लो: पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन॥ (भ:गी:9-26)

ता: यदि कोई मुझे प्रेम से, भक्ति से पत्ते को, फूल को, फल को या

जल को समर्पण करेगा तो मैं उसे स्वीकार करूँगा ऐसा भगवान् श्रीकृष्ण बता रहे है ।

इस प्रकार भगवान कृष्ण ने शाकाहार अर्पित करने को कहा,लेकिन मांसाहार समर्पण करने को नहीं कहा। इसलिए भगवान ने शाकाहार को पापकर्य जैसे नहीं बताया है।समर्पण करने को बता रहे है ।इसलिए शाकाहार लेते हैं तो पाप करना जैसा नहीं है, लेकिन मांसाहार लेंगे तो पाप करने जैसा है।

यीशु मसीह ने इस प्रकार से कहा: "THOU (YOU) SHALT NOT KILL" (10 वी आज्ञा में 5 वी आज्ञा) इसका मतलब है कि''तुम्हें मारना नही चाहिए'' ऐसा स्पष्ट रूप से आज्ञा जैसा कहा है। अर्थात उनका आदेश किसी को मारना नहीं है।

लेकिन ईसाइयों ने इस आदेश मनुष्यों के मामले में लागू करते है। वे मान ते है कि जानवरों के मामले में लागू नहीं होता। लेकिन अगर आप थोड़ा सोचेंगे, तो , मारना (KILL) हत्या (MURDER) ऐसे दो शब्द हैं ।हत्या शब्द का प्रयोग केवल मनुष्यों के विषय में इस्तेमाल करते हैं ।

और यदि यीशु ने मनुष्यों के मामले में वह आज्ञा दिया होता, तो क्या वह मारने के स्थान पर हत्या शब्द का सही प्रयोग किया जाता है ना? यीशु इतना कम बुद्धिमान या अज्ञानी नहीं थे कि वे सही शब्द का प्रयोग न कर सके? मारना (KILL) का अर्थ किसी को भी मारना हो सकता है, चाहे वह जानवर ही क्यों न हो। यही उनका आज्ञा है। अगर यीशु ने भी ईसाईयों की तरह मारना (KILL) का अर्थ केवल मनुष्यों को मारना ही माना होता, तो वे हत्या (MURDER) शब्द का ही प्रयोग किया होगा, ना?

लेकिन ईसाई अपनी आदत को सही ठहराने के लिए, उस परंपरा को जारी रखने के लिए तरह-तरह की अर्थ और व्याख्याएँ बोल रहे हैं। लेकिन किसी तरह के अर्थों लेने की जरूरत नहीं है ।क्योंकि यीशु ने अपनी आज्ञाओं में इसे स्पष्टता से कहा है।''तुम मत मारो'' का मतलब है कि ईसाइ लोग किसी को भी मारना नहीं चाहिए। इसलिए जब भी विषय स्पष्ट ता से न हो तो व्याख्यानों की जरूरत है लेकिन यहां विषय स्पष्ट ता से है। तुम मत मारो यह स्पष्ट आदेश है। उसके लिए हमारी व्याख्या क्यों? उनकी आज्ञा का पालन करना हमारा कर्तव्य है।

यदि ईसाई वास्तव में यीशु से प्रेम करते हैं, तो पशु वध को रोक कर, मांस भक्षण को छोड़ना चाहिए ।"प्राणियों को मत मारो" भगवन की आज्ञा का उल्लंघन करके हम भगवन के प्रति प्रेम दिखा रहे हैं। परमेश्वर के प्रेम का साक्षात्कार करने का प्रयास कर रहे हैं। यह कहने मे अर्थ नहीं है कि हम हृदयपूर्वक उनकी सेवा कर रहे हैं। क्योंकि जब हम भगवान के आदेशों का पालन नहीं करते, तो हमारी भगवान के प्रति प्रेम कैसे हो सकता है ? अगर हम उनसे प्रेम करते हैं, तो हम उनके आदेशों के अविज्ञाकारी जैसे नहीं हो सकते हैं ना ? यदि आप अवज्ञाकारी हो तो आपका प्रेमा सच्चा नहीं है।

लेकिन बहुत लोग इसे कोई खास बात नहीं मानते और इसे हल्के से निकाल देते हैं। लेकिन किसी भी विषय को छोड़ा गया तो आपके हिसाब में फर्क आ जाएगा। आप बाद में चाहे जितनी भी जोड़-घटाव करें, गलती तो गलती ही रहेगी। उसके बाद सारे हिसाब-किताब गलत हो जाएंगे। धर्मशास्त्रों में हम अपने मनपसंद बातों को अपनाकर और नापसंद बातों को छोड़कर नहीं चल सकते। अगर हम ऐसा करेंगे तब जो हम ने सोचा था वो परिणाम नहीं मिलेगा।

उदाहरण के लिए, अगर गाय को चारा डालें तो वह दूध देती है। दूध दुहना हमें पसंद का काम लगता है, लेकिन चारा डालना कठिन काम है। अगर हम यह सोचकर चारा डालना छोड़ दें कि वह मुश्किल है, तो हमें पसंदीदा दूध नहीं मिलेगा। इसी तरह, धर्मशास्त्रों के कठिन भागों को छोड़कर सिर्फ हमें पसंद आने वाले भागों का पालन करना पर्याप्त नहीं है। भगवान ने जो कर्तव्य बताए हैं, उन्हें जैसे के तैसे अपनाना चाहिए। अगर हम केवल अपनी सुविधा के अनुसार चलेंगे, तो हमें भगवान की कृपा प्राप्त नहीं होगी। जिस उद्देश्य से हम भगवान की प्रार्थना कर रहे हैं, वह व्यर्थ हो जाएगा। हमारे दुख, रोग, कष्ट दूर नहीं होंगे और जीवन दु:खमय बन जाएगा। इसलिए हमें अपने किए गए कार्यों को सही ठहराने की कोशिश बंद करनी चाहिए। फालतू के बहाने और कारण मत ढूंढिए। हिंसा को छोड़ दीजिए। हंसा को पकड़िए। अंत में कहने की बात यह है कि मांसाहार छोड़ देना चाहिए। ध्यान करना चाहिए।

''मांसाहार - कुछ महापुरुषों के अभिप्राय''

''जानवरों को एक ही झट में काटना, लंबे समय तक खून बहाते हुए मारना दोषपूर्ण, अधम और दया रहित है। ऐसे लोगों को अंत समय में दंड भुगतना होता है।'' –कबीर

''जानवरों का गला काटने को, उनकी खाल उतारने को, उन्हें टुकड़ों में काटने को इंसानों की आंखें कैसे सहन कर पाती हैं, यह मेरे समझ में नहीं आ रहा है। उसकी नाक उस दुर्गंध को कैसे सह सकती है ? यह दुर्गंध, गंदगी उसके मुँह के स्वाद को नहीं बिगाडेगा क्या ? इंसान औरों की हड्डियों से कैसे स्वाद पा सकता है ? वह उनके प्राणांतक घावों से मज्जा को, खून को कैसे चूस सकता है ? हम आत्मरक्षा के लिए शेरों, भेड़ियों को नहीं खाते। लेकिन हम उन निर्दोष जीवों को मार रहे हैं, जो न तो हमारे लिए कोई खतरा हैं, न ही उनके पास नुकीले दांत हैं, न ही कोई ज़हर है। जिन्हें प्रकृति ने केवल सुंदरता के लिए, शोभा के लिए सृष्टि किया है, उन्हें हम मार रहे हैं। हमें कोई शर्म महसूस नहीं होती। थोड़े से मांस के लिए हम उनकी जान ले रहे हैं।'' – फ्लूटार्कु

''मांस खाना परमार्थ में एक बड़ा अवरोध है।'' –जॉन वेस्ली

''मेरी परिस्थिति अजीब है। डॉक्टरों का कहना है कि मेरी जान सिर्फ गाय का मांस खाने से ही बच सकती है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि औरों के रक्त मांस को खाने से अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।'' – जार्जी बेर्नार्ड शॉ

''मांस खाने वाले हम चलते–फिरते कब्र हैं। इनमें हमारे जीभ स्वाद के लिए मारे गए जानवरों के लाशों को दफना दिया गया हैं। सडे लाशों का मांस नोचकर खाने वाले कौवों की तरह हम मांस खाकर जी रहे हैं। इससे जीवों को भयानक पीड़ा, कष्ट होता है, इस बात की हमें कोई चिंता नहीं। हम इसकी परवाह नहीं करते।'' – जार्जी बेर्नार्ड शॉ

''जानवरों के प्रति क्रूरता दिखाना न केवल मूर्खता है बल्कि परमात्मा का अपमान करना ही है।'' –थॉमस न्यूटन

''एक बकरी उसे मारने के लिए तैयार कसाई से पूछती है। हमारे जैसे पत्तियाँ, घास खाने वालों का गला कटवाना पड़ रहा है। ओरों का गला काटकर खाने वाले आप जैसों की स्थिति क्या होगी ?'' – भाई गुरूदास

''जो जीवित पशुओं को मारते हैं, उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि जिन्हें वे मारते हैं, उन्हें भी उन्हीं के हाथों मरना होगा। मनुष्य को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उससे किया कर्मो का किसी ना किसी दिन परिणामों को भुगतना पड़ेगा।''– गुरूरविदास

“जो लोग जीव हत्या करते हैं, भले ही उन्होंने पूरा कुरान शरीफ़ कंठस्थ किया हो या खुद को बड़े विद्वान समझते हों, वास्तव में उनका हृदय जीवों का मांस खाने के कारण अपवित्र हो चुका होता है। जो लोग जीवों को मारकर उनका मांस खाते हैं, उनके अंतिम समय में भारी पीड़ा होती है। उनके सिर पर उनसे किए गए कर्मों का भारी बोझ होता है। वे किसी भी परिस्थिति में नरक के दुखों से वे बच नहीं सकते।” – दरिया साहेब

“जीवों को मारने वाले, मरवाने वाले, बेचने वाले, पकाने वाले, परोसने वाले, मांस काटने वाले, खाने वाले,खिलाने वाले,इन आठ प्रकार के लोग हत्या में भागीदार होते हैं।” – मनुस्मृति

“मुल्ला, तुम क्यों चिल्लाकर ‘बांग’ देते हो ? अल्लाह बेहरा नहीं है। तीस दिन उपवास रखकर, हिंसा करके, जानवरों को मारकर मांस खाते हो। फिर खुदा का दर्शन तुम्हें कैसे होगा ? तुम मूल सत्य को भूलकर घोर पापों का गठरी बाँध रहे हो। ” – गरीब दास जी

मांस खाने वाले, शराब पीने वाले का हृदय कठोर होता है। ऐसे कठोर हृदय में परमात्म का प्रकाश प्रकट नहीं होता। – दादू दयाल

इस शरीर के पोषण के लिए अन्य जीवों को क्यों मारना ? चींटी में, हाथी में, पशु में, मनुष्य में, हर किसी में वही परमात्मा है। –मलूक दास

मार डाला जानवर का मांस खाने के योग्य कैसे होता है ? पाप के कामों को करके स्वर्ग को क्यों लात मार रहे हो। जीब के स्वाद के लिए अपना जन्म क्यों नाश कर रहे हो। – परसाजी

कसाई की तरह हिंसात्मक काम करते हुए, ऐसी क्रूर विचारों में डूबा रहने वाला व्यक्ति दुष्ट, दुराचारी, कायर, हत्यारा, महापापी और दुष्ट बुद्धि वाला होता है। ऐसे नीच तरीकों से धन कमाने वाला अंततः निश्चित रूप से नरक को जाता है। इस तरह का व्यवहार होने वाला अपना अमूल्य मानव जन्म को कचरे के ढेर में फेंक रहा है। – संत नामदेव

भगवान के दरबार में न्याय के लिए एक बकरी की शिकायत “हे भगवान, मनुष्य ने मेरा सिर को काट दिया, उसके सिर को भी काट देना चाहिए। बकरी भगवान से विनती करती है कि गरीबों को, अमीरों को एक ही तरह से न्याय करिए ।” –वाजिद जी

मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में मांस नहीं खाना चाहिए। हम पशुओं से श्रेष्ठ हैं। मांस खाकर उन निम्न श्रेणी के जीवों की तरह व्यवहार करना हमारे लिए उचित नहीं है। – महात्मा गाँधी

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.. Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।.. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?.. Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।.. Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ । Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ? Rs.100/-
12. मेहरी बाबा का संदेश । Rs.100/-
13. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.................Rs.80/-
14. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।.......................................Rs.80/-
15. आत्म हंता कौन होता है ।..Rs.70/-
16. दुख निवारण का मार्ग...Rs.75/-
17. उत्तम पुरूष...Rs.60/-
18. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ? Rs.60/-
19. निर्वाण मार्ग...Rs.60/-
20. सत्य..Rs.50/-
21. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ? Rs.50/-
22. गुरू को पहचानना कैसे ?..Rs.50/-
23. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
24. शाकाहार ही मानव का आहार है! Rs.50/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthyvari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

मॉँसाहार विषाहार है - शाकाहार श्रेष्ठाहार है।

Pyramid Spiritual Societies Movement - India